175 Φ
664
H
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1171/1021

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 664

2/1911

राष्ट्रीय गीत

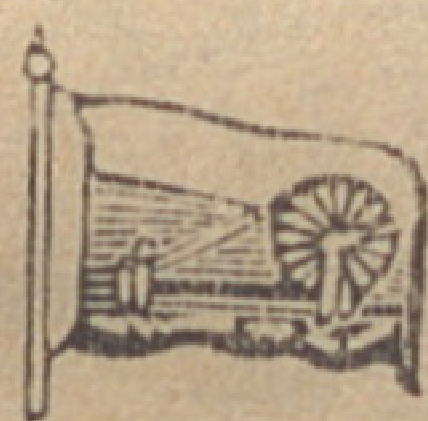

प्रकाशक

अवस्थी ब्रदर्स

७२ जान्स्टनगंज, इलाहाबाद

प्रथमावृत्ति] १९३० [मूल्य तीन पैसा

891.431
R183K

IMPERIAL RECORD
RECEIVED.
25 AUG. 1930
DEPARTMENT

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 664
Date 16.12.71
GOVT. OF INDIA

❀ वन्देमातरम् ❀

राष्ट्रीय गीत

१–वन्देमातरम्

सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्,
शस्य श्यामलाम् मातरम्॥ वन्दे।
शुभ्रज्योत्स्नां–पुलकित यामिनीम्,
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल शोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम् मातरम्॥ वन्दे।
त्रिंश कोटि-कंठ-कलकल-निनाद-कराले,
द्वित्रिंश कोटि भुजैर्धृत खरकर वाले,
के बोले माँ! तुमि अबले,
बहुबल धारिणीम्, नमामि तारिणीम्,
रिपुदल वारिणाम् मातरम्॥ वन्दे।
श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्
धरणीम् भरणीम् मातरम्॥ वन्दे।

२—राष्ट्रीय झण्डा

झण्डा ऊँचा रहे हमारा।

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥
सदा शक्ति बरसाने वाला,
प्रेम सुधा सरसाने वाला।
वीरों को हर्षाने वाला,
मातृ-भूमि का तन मन सारा॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥

स्वतन्त्रता के भीषण रण में,
लख कर बढ़े जोश क्षण क्षण में।
काँपे शत्रु देख कर मन में,
मिट जावे भय संकट सारा॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥

इस झण्डे के नीचे निर्भय,
लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय।
बोलो भारत माता की जय,
स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।

आवो प्यारे वीरो आवो,
देश धर्म पर बलि बलि जावो।
एक साथ सब मिल कर गावो,
प्यारा भारत देश हमारा॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥

इसकी शान न जाने पावे,
चाहे जान भले ही जावे।
विश्व विजय करके दिखलावे,
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥

—:※:—

३—रफ़्तार

तबदील गवर्नमेण्ट की रफ़्तार न होगी।
गर कौम असहयोग पै तैयार न होगी॥
बन जांयगे हर शहर में जलियान वाले बाग़।
इस मुल्क से गर दूर यह सरकार न होगी।
दुश्मन को असहयोग से हम ज़ेर करेंगे।
इन हाथों में बन्दूक औ तलवार न होगी॥
यह जेलखाने टूट कर अब और बनेंगे।
इनमें तमाम क़ौम गिरफ़्तार न होगी॥

वह कौन असीरे वतन होगी भला जिसपर
हँस हँस के फ़िदा जेल की दीवार न होगी ॥
सौदाई हैं हम को दो लोहे की बेड़ियां।
सोने के ज़ेवरों में यह झन्कार न होगी ॥
जब तक कि इसे खून से सींचेंगे नहीं हम।
खेती वतन की दोस्तो तैयार न होगी ॥
हम ऐसी हुकूमत को मिटा देंगे मुज़तरिब।
ग़म में जो हमारे ग़मख्वार न होगी ॥

—:❀:—

४—स्वतंत्र भारत

अहाहा मोहन के मुख से निकला स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत।
सचेत हो कर सुना सभी ने स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत ॥
समीर में नीर में गगन में वचन में तन में हर एक मन में।
वही मधुर ध्वनि समा रही है स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत ॥
हर एक घर में मची हुई है स्वतंत्रता की विचित्र हलचल।
हर एक बच्चा पुकारता है स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत ॥
रहा हमेशा स्वतंत्र भारत रहेगा फिर भी स्वतंत्र भारत।
दिखाई देता है स्वप्न में भी स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत ॥
बना के कुटियाँ स्वतंत्रता की सपूत जेलों में रम रहे हैं।
निकल के देखेंगे वह तपस्वी स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत ॥
कुमारी हिमगिरि अटक कटक में बजेगा डंका स्वतंत्रता का।
कहेंगे तैंतिस करोड़ मिल कर स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत-।

५—करबला

रवाना नौकरेशाही का जिस दम काफ़िला होगा।
हमें अज़हद खुशी होगी तो उनका करबला होगा॥
हमारा ही नमक खाकर हमें करते जो बेइज़्ज़त।
हमारी आह से हरगिज़ नहीं उनका भला होगा॥
अभी तो नौकरो हम को सतालो जितना जी चाहे।
जब अपना राज्य होगा तब न कुछ शिकवा गिला होगा॥
उधर मशहूर हो तुम बेकसों का दिल दुखाने में।
इधर मेरे मुकाबिल भी न कोई दिलजला होगा॥
समझ लेना खूब दिल में रियाया को सताने से।
तुम्हारी तेग के नीचे तुम्हारा ही गला होगा॥
हमें बरबाद करने का मज़ा उस वक्त आएगा।
खुदा के रूबरू सरयू ये जिस दम मामला होगा॥

६–चक्की चलाना

जो कुछ पड़ेगी मुझपै मुसीबत उठाऊंगी।
खिदमत करूँगी मुल्क की और जेल जाऊँगी ॥
बानों में अपने खद्दर के कपड़े बनाऊँगी।
और इन विदेशी लत्तों में मैचिस लगाऊँगी ॥
चरखा चलाके छीनूंगी उनकी मशीनगन।
उद्दूए मुल्को क़ौम को नीचा दिखाऊँगी ॥
मैं अपनी मुल्की बहिनो को ले ले कर अपने साथ।
भट्ठी पर हर कलाल के धरना बिठाऊँगी ॥
जा कर किसी भी जेल में कूटूँगी राम बाँस।
वालण्टियर के साथ में चक्की चलाऊँगी ॥

—:❀:—

७–नवजवानो !

भारत के नौजवानों, मैदान जंग आओ।
बन देश प्रेमी अपना, जीवन सफल बनाओ ॥
वे वीर त्यागी अपना, कर्तव्य कर रहे हैं।
है राह उनकी सीधी, उस पर क़दम बढ़ाओ ॥
है कौन शक्ति ऐसी, जो तुमको रोक लेगी।
गर एक साथ होकर, बल अपना तुम दिखाओ ॥
भय त्याग दो अभय बन, स्वातन्त्र जंग छेड़ो।
भू मां को अपनी वीरो, बंधन से तुम छुड़ाओ ॥

८—क्या हमारे दिल में है

सर फ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना अब ज़ोर कितना बाज़ुये क़ातिल में है॥
रहबरे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में।
लज़्ज़ते सहरानवर्दी दूरये मंज़िल में है॥
वक़्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमां!
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है॥
आज फिर मक़तल में क़ातिल कर रहा है बार बार।
क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है॥
ऐ शहीदे मुल्क मिल्लत हम तेरे ऊपर निसार।
अब तेरी हिम्मत की चरचा ग़ैर की महफ़िल में है॥
अब न अगले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़।
सिर्फ़ मिट जाने की हसरत अबदिले 'बिस्मिल' में है॥

—:❀:—

९—वतन के वास्ते

क्या हुआ गर मर गये अपने वतन के वास्ते।
बुलबुलें कुर्बान होती हैं चमन के वास्ते॥
तर्स आता है तुम्हारे हाल पै ऐ हिन्दियो!
ग़ैर के मोहताज़ हो अपने कफ़न के वास्ते॥
देखते हैं आज जिसको शाद है, आज़ाद है।

क्या तुम्हीं पैदा हुये रंजो मेहन के वास्ते ॥
दर्द से अब बिलबिलाने का ज़माना हो चुका।
फिक्र करनी चाहिये मर्ज़ें कुहन के वास्ते ॥
हिन्दुओं को चाहिए अब क़स्द काबे का करें।
और फिर मुस्लिम बढ़ें गगो जमन के वास्ते ॥

—:※:—

१० दमन का दिवाला

दिवाला शीघ्र निकलेगा अरे थोथे दमन तेरा।
खिज़ाँ से खूब उजड़ेगा अरे जालिम चमन तेरा ॥
सताले और थोड़े दिन सेवेदिल बे गुनाहों को।
यहां से शीघ्र ही होगा अरे गर्वी गमन तेरा ॥
हमें लाचार कर तूने झुकाया खूब चरणों में।
हमीं विपरीत अब इसके विलोकेंगे नमन तेरा ॥
अरे कायर निहत्थों को रेंगाया पेट के बल क्यों।
लखेंगे शीघ्र ही हम भी अरे पापी पतन तेरा ॥
बहुत अब कर चुका शासन यहां से अब उठा आसन।
हमारा देश है भारत नहीं है यह वतन तेरा ॥
दबाले और थोड़े दिन दमनकारी तू दुखियों को।
निहत्थे निर्बलों की आह से होगा निधन तेरा ॥

दमन से रह नहीं सकता कभी भी यह अमन क़ायम।
करेगा यह दमन ही अन्त में निश्चय शमन तेरा॥
मिलेगी आत्मबल को जय दमन तेरे पशु बल पर।
चकित संसार देखेगा मिटेगा जब वतन तेरा॥

—:※:—

११—विदेशी वहिष्कार

अब बिदेशी माल बाहर से मँगाना छोड़ दो।
खासा मलमल डोरिया तन से लगाना छोड़ दो॥
क्यों प्रतिज्ञापत्र पर दस्तख़त किये बेफ़ायदा।
अपने ही हाथों से इज्ज़त का घटाना छोड़ दो॥
सेठ साहूकार हो तुम लक्ष्मी के लाल हो।
प्राग जी के वासियो लुटिया डुबाना छोड़ दो॥
गाँधी बाबा का तुमको रहम क्या बिलकुल नहीं।
वोह तो खुद दुखिया हैं उनका दिल दुखाना छोड़ दो।
वालण्टियर द्वारे तुम्हारे जान तक दे देयंगे।
सोचो दिल में भाइयो आफ़त का ढाना छोड़ दो॥

—:※:—

१२–सैनिक

निकल पड़ो अब बन कर सैनिक भंग करो फर्मानों का ।
बिन स्वराज्य के नहीं हटेंगे कौल रहे मर्दानों का ॥
अन्धी हो कर पुलिस चलावे डंडे कुछ पर्वाह नहीं ।
घर का माल लूट ले जावे निकले मुँह से आह नहीं ॥
जेल यातना हो निर्दय दल करें गोलियों की बौछार ।
ईश्वर का सुमिरण कर वीरो सहते जाओ अत्याचार ॥
धनी देश रिपुदास नपुंसक लखें दृश्य बलिदानों का ।
बिन स्वराज्य के नहीं हटेंगे कौल रहे मर्दानों का ॥
भगवन भला करें इरविन का बने यशस्वी बृटिश निशान ।
होय निहत्थों पर मार्शल ला शहरों गावों के दरम्यान ॥
नर नारी बच्चों को गोरे अत्याचारी खूब हने ।
भारत के कोने २ में जलियां वाला बाग बने ॥
चिन्ता नहीं बहे लहराता चहुंदिश खून जवानों का ।
बिन स्वराज्य के नहीं हटेंगे कौल रहे मर्दानों का ॥

—:❀:—

१३–राष्ट्रपति जवाहरलाल

भारत का डंका आलम में, बजवाया वीर जवाहर ने।
स्वाधीन बनो स्वाधीन बनो, समझाया वीर जवाहर ने ॥१॥
वह लाल जो मोतीलाल का है, है लाल दुलारा भारत का।
सोते भारत को हठ करके, जगवाया वीर जवाहर ने ॥२॥
अंगरेज़ों की मृगतृष्णा में, भूले थे भारतवासी सब।
पूरी आज़ादी का मंतर, सिखलाया वीर जवाहर ने ॥३॥
घोंटी है राजनीति उसने, छानी है ख़ाक विदेशों की।
समता स्वतंत्रता का मारग, दिखलाया वीर जवाहर ने ॥४॥
पूंजीपति ज़मींदार करते हैं, ज़ुल्म मजूर किसानों पर।
बन साथी दीनों का धीरज, धरवाया वीर जवाहर ने ॥५॥
इक रोशन आग धधकती है, आज़ादी की उसके दिल में।
जिससे युवकों का मुर्दा दिल, चमकाया वीर जवाहर ने ॥६॥
आदर्श-चरित से यह अपने, युवकों का है सम्राट् बना।
आज़ादी का ऊंचा झंडा, फहराया वीर जवाहर ने ॥७॥
बिजली है वाणी में उसकी, जादू है आंखों में उसकी।
देखा जिसको एक पल-भर में, अपनाया वीर जवाहर ने ॥८॥

—:❀:—

१४–हिन्द में क़ानून-भङ्ग

क़ानून भङ्ग का हिन्द में, अब बोल बाला हो गया।
देख ले ऐ दुश्मने ! दिल तेरा काला हो गया॥
नाटक हमारा है बड़ा, और वक्त है पर्दा खुले।
हिरनाकुशो प्रहलाद का, अब तो हवाला हो गया॥
क़ानून तेरा अब कोई, हम मान सकते हैं नहीं।
नमक के क़ानून का भी, अब दिवाला हो गया॥
इसके बदले में हमें तुम. अब कहां हो भेजते।
जेलख़ाना भी हमें, मस्जिद शिवाला हो गया॥
जाके पहुंचें जेल में, औ देश-भक्तों से मिलें।
देखकर दुश्मन भी कह दे, तह ओबाला हो गया॥
रोक सकता तू नहीं ज़ालिम मेरे गान्धी की शान।
आसमां भी अब उन्हें, मकड़ी का जाला हो गया॥

१५–चरख़ा गीत

चरखे सुन कर तेरी तान मेरा मन होता मतवाला।
तेरे सरस राग में डूब जीको कभी न आती ऊब॥
गाते २ काते खूब प्रहरों चतुर कातने वाला।
धीमी हो न अन्त तक चाल ढीली रहे न उतरे माल॥

टूटे बिना सूत सब काल निकले साँचे का सा ढाला।
इतना मिले देश को माल नंगा रहे न कोई लाल॥
पहिने सब खद्दर इस साल कर शौकीनी का मुँह काला।
मांकी बचे लोक में लाज गैरों की न रहे मोहताज॥
भूखे भाई पावें नाज घर में बैठे बन कर लाला।
रखले बहिनों का भी मान करके उन्हे जीविका दान॥
जो थी पैसे बिन हैरान बनकर कुली पेट को पाला।
बदले विदेशियों से छोड़ रख सालाना साठ करोड़॥
दे गैरों से तल्ला तोड़ जप कर बहिष्कार की माला।
भारत फिर होवे धनवान भूखों मरें न दीन किसान।
तुझको चक्र सुदर्शन मान समझे प्राणों का रखवाला॥
तू है तीर तोप तलवार तेरी बड़ी बिकट है मार।
होगा अगर सँभल कर वार कट जायेगा कठिन कसाला॥
भारत नैया के पतवार होंगे तुझे पकड़ हम पार।
कितनी और तेज़ हो धार अपने को बस इधर बढ़ाला॥
हम को पैरों अपने आप करदे खड़ा मिटे संताप।
भागे पराधीनता पाप जिसने हमें पंगु कर डाला॥
चरखे तेरे बल पर आज हासिल कर ले हिन्द स्वराज्य।
शिर पर आज़ादी का ताज़ चमके निश्चय नया निराला॥

—:※:—

शुद्ध स्वदेशी

हमारे यहाँ मिलने वाली चीज़ें

चित्र—राष्ट्रीय नेताओं और कार्यकर्ताओं के चित्र।

साबुन—बनारस युनिवर्सिटी का नहाने, धोने, और रंगने का साबुन।

रील—शुद्ध स्वदेशी भारतीय पूंजी से चलने और भारतीय प्रबन्ध द्वारा तैय्यार की गई पेचक, रील।

बटन—शुद्ध खद्दर और सीप के बटन।

पुस्तकें—वर्तमान युद्ध विषयक साहित्य और जीवनी।

तकली—महात्मा गाँधी को बहुत ही प्यारी और प्रत्येक भारतीय को कातने योग्य तकली।

इनके अतिरिक्त और भी स्वदेशी चीज़ें स्याही, पाउडर वगैरह वगैरह।

एक बार आइये देखिये और देशोद्धार में सहायता कीजिये

अवस्थी ब्रदर्स,

जान्स्टनगंज, इलाहाबाद।

मुद्रक—बद्रीप्रसाद पाण्डेय, नारायण प्रेस, प्रयाग।